नवयुग चेतना

स्वागत-स्वागत-स्वागत

आओ जी-जी आयां नूं

श्री रघुनाथ जी श्री साजन जी का स्वागत कर रहे हैं

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

आओ जी-जी आयां नूं, आओ जी-जी आयां नूं।
जलचर थल प्रकाशे प्यारा आओ जी-जी आयां नूं।।

ओ ओ ओ ओ ओ आ आ आ आ आ।
भजो श्री साजन सुखधाम, भजो श्री साजन सुखधाम।
सुखधाम सुखमय घर हमारा श्री साजन सुखधाम।।

नटवर नटवर ओ खेल तुम्हारे नटवर दिखाये ओ कैसे नज़ारे।
ओ ओ ओ ओ ओ आ आ आ आ आ।
कैसा है ओ नटवर ओ हो, कैसा है ओ नटवर वाह वाह।।

सब घट नटवर नागर सागर सारी विश्व तुझे आराधे आओ जी-जी आयां नूं।
जलचर थल प्रकाशे प्यारा, आओ जी-जी आयां नूं।।

अद्‌भुत माया तुम्हारी ओ अद्‌भुत, मन मन्दिर अन्दर साजे।
आओ जी-जी आयां नूं हुण आओ जी-जी आयां नूं।।

बनचर अन्दर बसयों जनचर जड़ चेतन विच निवासे प्यारा।
आओ जी-जी आयां नूं हुण आओ जी-जी आयां नूं।
जलचर थल प्रकाशे प्यारा, आओ जी-जी आयां नूं।।

दया दे भंडार हैं नाम कृपा सागर।
हथ चक्र मुख मुरली साजे, हुण आओ जी-जी आयां नूं।।

हुण आओ जी-जी आयां नूं।
जलचर थल प्रकाशे प्यारा, आओ जी-जी आयां नूं।।

अजब खेल ढंग हैं निराले अजब आद मध्य अन्त प्रकाशे प्यारा।
आओ जी-जी आयां नूं हुण आओ जी-जी आयां नूं।
जलचर थल प्रकाशे प्यारा, आओ जी-जी आयां नूं।।

''साडा है सजन राम, राम है कुल जहान''

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या कह रहा है :-

''ए ग्रन्थ कुदरती सतवस्तु दा आ रिहा, तूं मैं किसे दा सवाल नहीं।
ए ग्रन्थ सब दा है ओ सांझा,ऐथे वड छोट दा कोई प्रभाव नहीं।''

सत्य

सत्य

सत्य